5. परिसंपत्तियां (एसेट) या कष्टप्रद बोझ?

सन १९८७ में स्कूटर इंडिया लिमिटेड पर केस स्टडी लिखने के बाद, मैं ''परिवर्तन प्रबंधन'' (मैनेजमेंट ऑफ़ चेंज) कोर्स की कक्षा में ''रचनात्मक सोच'' पर एक अभ्यास करा रहा था। स्कूटर इंडिया उस समय 2 व्हीलरस्कूटर पर ध्यान केंद्रित कर रहा था। नए विचार उत्पन्न करने के लिए, मैंने ''विक्रम'' 3-व्हीलर का उदाहरण लिया, जिसे मैंने बदलाव के साधन के रूप में सुझाया था। दोनों वाहनों के निर्माण के लिए एक ही संयंत्र और मशीनरी का इस्तेमाल किया जा सकता था ।मैंने सवाल पूछा ''विक्रम क्या है?''यह एक ऑटोरिक्शा था, जो आसानी से 8 व्यक्तियों को बैठा सकता था और ३२ कि.मी.प्रति लीटर डीजल की ईंधन दक्षतासे चलता था, जो इसे सबसे किफायती यात्री परिवहन वाहन बनाता था।

जब मैंने एक संकेत दिया, तो छात्र इसे एक वातानुकूलित यात्री कार में परिवर्तित करने के बारे में सोचने लगे। ज़्यादा मूल्य और खर्चीली होने के कारण उन दिनों कारें बहुत प्रचलन में नहीं थी ।) कुछ और बढ़ावा देने पर वे इसे (कुछ और अनुलग्नकों में लगा कर) शहर से गाँव के लिए कम लागत वाले माल वाहक वाहन के रूप में देखने लगे जो गांव से शहर में दूध, सब्जी / अनाज का सामान ले सकताथा, और किराने का सामान गाँव तक ले सकता था। पहियों पर एक सवाल ने एक स्थिर ''वाहन'' के विचार को जन्म दिया है जिसे गांव में मनोरंजन, मोबाइल लाइब्रेरी, मोबाइल शौचालय, थ्रेसर, सिंचाई के पंप के रूप में इस्तेमाल किया जा सकता है। सभी को आश्चर्यचकित था कि विदेशों से आयात किए गए इस डिजाइन को एक शानदार व्यवसाय में परिवर्तित किया जा सकता है, अगर केवल हम में सुधार करने की क्षमता और जज़्बा हो । डा सहाय ने स्कूटर इंडिया लिमिटेड टर्न एराउंड तीन पहिया वाहनों पर ध्यान केंद्रित करके ही किया ।

परिसंपत्ति (एसेट) केवल संसाधनों की उपलब्धता नहीं होती है। संसाधनों उचित उपयोग करने की उसकी प्रबंधकीय क्षमता उन्हें परिसंपत्ति में बदलती है। शायद हमें परिसम्पत्तियों की प्रबंधकीय अवधारणा बदलने की आवश्यकता है। परिसंपत्ति की लेखा अवधारणा का उपयोग करने के बजाय, परिसंपत्ति की प्रबंधकीय अवधारणा इसका उपयोग करने की क्षमता होती है। संसाधनों को विकसित करने और कुछ उपयोगी / वांछनीय सार्वजनिक वस्तुवें व सेवाएं प्रदान करने के लिए उन्हें इस्तेमाल करने की क्षमता के बिना संसाधनों की उपलब्धता या अधिग्रहण परिसंपत्ति नहीं बनती हैं। इस क्षमता के बिना संसाधन एक कष्टप्रद दायित्व/ देनदारी/ बोझ हो सकता है। यह सभी संसाधनों पर लागू होता है, चाहे वह वित्तीय हो, भौतिक, मानव, संगठनात्मक या नेटवर्क संसाधन हो। इस क्षमता के बिना संसाधनों की प्रचुरता के रहते हुए भी कोई संसथान या देश प्रगति एवं समृद्धि नहीं प्राप्त कर सकता। यदि इसका उपयोग नहीं किया गया, तो यह एक बड़ी कष्टप्रद दायित्व/ देनदारी/ बोझ भी बन सकती है। यदि गलत इस्तेमाल किया जाता है, तो यह एक आपदाभीहो सकती है।

भारत को भगवान द्वारा दिए मानव संसाधन को परिसंपत्तिमें परिवर्तित करने के मामले में एक बड़ी चुनौती

का सामना करना है। मानव संसाधन केवल भौतिक अंग नहीं हैं जिसे केवल श्रमिक के रूप में उपयोग कर सकते हैं। मानव संसाधन में मष्तिष्क भी है और हृदय भी जो इसे उपयोगी / वांछनीय सार्वजनिक वस्तुवें या सेवाएं निर्माण और प्रदान करने की क्षमता देती हैं। सरकार को केवल रोजगार देने की सोच के बजाय (जो देश सभी के लिए पूरी कोशिश कर रहा है) को युवाओं को परिसंपत्ति संपत्ति के रूप में सोचना और देखना और विकसित करना होगा।

Indian Economic Policy Maker’s View of Man	God’s Gift of Man

पुनश्च : मेरी तरह (सत्तर पार के) वयोवृद्ध, स्कूटर इंडिया के (बिना पहिये के) ३-व्हीलर वाहन की तरह हैं, जो अब भी कुछ उपयोगी सेवाएं प्रदान कर सकते है किन्तु यदि उन्हें ३-व्हीलर पैसेंजर वाहन की तरह देखा जाये तो वह सिर्फ एक व्यर्थ भार/ दायित्व की तरह सिद्ध होंगे।